© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

वैदिक सैन्यविज्ञान

बबली सिंह, (जे0आर0एफ0)
शोधच्छात्रा संस्कृत–विभाग
नेहरू ग्राम भारती मानित् विश्वविद्यालय
कोटवा–जमुनीपुर, दुबावल
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

शोध आलेख सार– वैदिक वाड्मय में वर्णित सैन्य विज्ञान में जो व्यवस्था एवं सेना परिचय द्रष्टव्य होता है, वह वेद की तरह ही प्राचीन एवं सर्वोत्तम है।वेद में मरुत्गण जिस तरह मनुष्यों की रक्षा करते है, तथा संघ के साथ आह्वाहन करने पर मनुष्य की रक्षा हेतु आते है वैसा आधुनिक समय में दृष्टिगोचर नही होता है, वैदिक वाड्मय की सेना वास्तव में देवताओं की सेना थी, जो मरुतगणों के द्वारा युद्ध आदि के कार्य सम्पन्न किए जाते थे। मरुतगण अदम्य वीर एवं साहसी सैनिक होते थे।

मुख्य शब्द – वैदिक, सैन्यविज्ञान, मनोविज्ञान, कार्यविधि, धनुष–बाण, तलवार।

सैन्य विज्ञान के अन्तर्गत युद्ध एवं सशस्त्र संघर्ष से सम्बंधित तकनीकों मनोविज्ञान एवं कार्यविधि आदि का अध्ययन किया जाता है। भारत सहित दुनिया के कई प्रमुख देश जैसे अमेरिका, इजराइल, जर्मनी, पाकिस्तान, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, रूस, इंग्लैण्ड, चीन, फ्रांस, कनाडा, जापान, सिंगापुर, मलेशिया में सैन्यविज्ञान विषय को सुरक्षा अध्ययन, रक्षा एवं सुरक्षा अध्ययन, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन, सरुक्षा एवं युद्ध अध्ययन नाम से भी अध्ययन–अध्यापन किया जाता है।

वैदिक वाड्मय में भी सैन्य विज्ञान का पर्याप्त वर्णन प्राप्त होता है, वैदिक काल में सेनाओं का आकार बृहद् रूप में होता था। सबका गणवेष एक होता था, सबके अस्त्र–शस्त्र समान रहते थे।

आर्य जाति युद्धपिय्र थी और उसने युद्ध की कला का अच्छा अभ्यास किया था। धनुष–बाण और तलवार इनके प्रमुख हथियार थे। आर्य भालों और छुरियों का भी प्रयोग करते थे। शरीर की रक्षा के लिए

लोहे के कवच, तोप और दस्तानों को पहना जाता था। युद्धों में सवारी के लिए घोड़े और रथ काम में आते थे।

1. सप्त सैनिक की अवधारणा :–

प्रत्येक पंक्ति में सात–सात सैनिक होते थे

गणेशो हि मरूतः (ताण्ड्यब्राह्मण, 19–14–2)

मरुतो गणानां पतयः (तैत्तिरीय ब्रा0 13.11.4.2)

मरुतों का विभाग गणशः होता था इस कारण से वे मरुद्गण कहलाते थे। ये सात की नियत संख्या में होते थे –

सप्त हि मरुतो गणाः (शतपथ ब्राह्मण 5.43.17)

सप्त गणा वै मरुत : (तैत्तिरीय ब्राह्मण 1.6.2.3)

सप्त–सप्त हि मारुता गणाः (शुक्ल यर्जुद 10.80.54, शतपथ ब्रा0 9.3.9.25)

मरुतों की सेना सात–सात सैनिकों की होती थी। एक पंक्ति में सात सैनिक होते थे। इनको जो उपहार दिया जाता था वे सात कटोरियों में होते थे –

मारुतः सप्तकपालः (शतपथ ब्राह्मण 2.5.7.12)

सप्तमै सप्त शाकिनः (ऋग्वेद 5.52.17)

प्रयेशुम्भन्ते जनयो न सप्तया (ऋग्वेद 1.85.1)

आ वो वहन्तु सप्तयो रघुष्यदो (ऋग्वेद 1.85.6)

भेषजस्य वहता सुदानवः यूयं सखायः, सप्तयः (ऋग्वेद 8.20.23)

त्रिसप्तातः 3X7=21 सप्त में सप्त 7X7 =49 (चले मरुत् उनचास) प्रत्येक पंक्ति में सात–सात होने के कारण सातवी पंक्ति में इनकी संख्या ऊनचान हो जायेगाी। शत्रु के हमला करने के समय में भी ये प्रायः सात–सात की पंक्ति में होकर सामना करते है।

मरुत् का अथ है मारूद् – ये वीर रोते नही हैं। मरते दम तक लड़ाई लड़ते हैं। मरुद्गण एक देवगण का नाम है। वेदों में इन्हें रुद्र और वृष्नि का पुत्र लिखा है और इनकी संख्या 60 की तिगुनी मानी गयी है पर पुराणों में इन्हें कश्यप और दिति का पुत्र लिखा गया है जिसे उसके वैमात्रिक भाई इन्द्र ने गर्भ काटकर एक से उनचास टुकड़े कर डाले थे, जो उनचास मरुद् हुए। वेदों में मरुत् गण का स्थान अंतरिक्ष लिखा है, इनके घोड़े का नाम 'पृशित' बतलाया है तथा उन्हें इन्द्र का सखा लिखा है। पुराणों में इन्हें वायुकोण का दिक्पाल कहा जाता है।

प्रचेतसः मरुत : (मरुत् ज्ञानी है)

दूरे दृश : (वे दूरदर्शी हैं)

कवयः मरुतः (वे कवि है)

उग्राः मरुतः (मरुत् उग्र है)

सुमाया मरुतः (शत्रु को जड़मूल से उखाड़कर फेंकने वाले मरुत् हैं।

स्थिर शत्रु को भी अपनी शक्ति से ये मरुत् स्थान भ्रष्ट करते हैं। (ऋग्वेद 1.85.4)

मरुतों का संघ होता है, अर्थात् मरुत् गणशः रहते है। मरुतों का गण सात–सात का होता है। इस कारण इनको सप्ती कहते है। सात–सात सैनिकों की सात पंक्तियों में ये 49 रहते है और प्रत्येक पंक्ति के दोनों ओर एक पार्श्व रक्षक रहता है अर्थात ये रक्षक 14 होते हैं। इस तरह सब मिलकर 49 सैनिक 14 पार्श्वरक्षक 63 सैनिकों का एक गण होता है। ''गण'' का अर्थ ''गिने हुए सैनिकों का संघ'' है। इन मरुतों के संघ इस तरह 63 सैनिकों के होते थे।

पार्श्वरक्षक	सैनिक	पार्श्वरक्षक
(x)	x x x x x x x	(x)
(x)	x x x x x x x	(x)
(x)	x x x x x x x	(x)
(x)	x x x x x x x	(x)
(x)	x x x x x x x	(x)
(x)	x x x x x x x	(x)
(x)	x x x x x x x	(x)

त्रिः षष्टिस्त्वा मरूतो वावृधाना (ऋग्वेद 8.96.8)

तीन और आठ अर्थात् तिरसठ मरुदवीर तुमको बढ़ाते है।

सात मरुतों के नाम इस प्रकार है :–

(1) आवह

(2) प्रवह

(3) संवह

(4) उद्वह

(5) विवह

(6) परिवह

(7) परावह

इनके सात–सात गण निम्न जगह विचरण करते हैं

ब्रह्मलोक, इन्द्रलोक, अंतरिक्ष, भूलोक की पूर्वदिशा, भूलोक की पश्चिम दिशा, भूलोक की उत्तर दिशा और भूलोक की दक्षिण दिशा।

शर्ध शर्ध व एषां व्रार्त–व्रातं गणंगणं सुशस्तिभिः।

अनु क्रामेम धीतिभिः (ऋ0 सं0 5.53.11)

प्रत्येक सेना पथक के साथ, सेना समूह के साथ, सैन्य के गण के साथ उत्तम अनुशासन धारणा के साथ अनुक्रम से चलते हैं।

अक्षौहिणी सेना

महाभारत में भी अक्षौहिणी सेना का उल्लेख आया है। जिसमें एक अक्षौहिणी सेना में 21870 रथ, 21870 हाथी, 65610 घोड़े, और 109350 थल सेना मिलकर एक अक्षौहिणी सेना बनती है। इसके साथ रथ, हाथी, घोड़ो के साथ कई मनुष्य होते हैं। इसके अनुसार इसका अनुपात 9 रथ : 9 गज : 3 घुड़सवार : 5 पैदल सैनिक होता था। इसके प्रत्येक भाग की संख्या के अंकों का कुल जमा 18 आता है। एक घोड़े पर एक सवार बैठा होगा, हाथी पर एक से कम दो व्यक्ति का होना आवश्यक है, एक फीलवान और दूसरा लड़ने वाला योद्धा, इसी प्रकार एक रथ में दो मनुष्य और चार घोड़े रहे होंगे।

अक्षौहिणी हि सेना सा तदा यौधिष्ठिरं बलम्।

प्रविश्यान्तर्दधे राजन्सागरं कुनदी यथा।'

चतुरंगिणी सेना – प्राचनी भारतीय संगठित सेना

सेना के चार अंग – हस्ती, अश्व, रथ, पदाति माने जाते है और जिस सेना में ये चारों है, वह चतुरंगिणी कहलाती है।

न पर्वता न नघो वरन्त वो

यत्राचिहवं मरुतो गच्छथेद् तत्।

उत द्यावा पृथिवी याथना परि

शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ।। (द्वग्वेद 5.55.7)

पर्वत, नदियाँ इन वीरों का मार्ग नहीं रोक सकतीं। ये अन्तरिक्ष में जायें या पृथिवी के नीचे ऊपर कहीं भी जा सकते हैं। सैनिकों के चार प्रकार के मार्गो का भी वर्णन वेदों में हुआ है। ये मरुद्गण पैदल भी चलते हैं और रथों में भी जाते हैं।

मारुतनर्वार्ण रथेशुभम। कण्वां अभि प्र गायत। (ऋग्वेद 1.37.1)

अश्वों से चलने वाले रथ, अश्वपर्ण = रथ कपड़े में हवा के वेग से चलने वाले रथ जो मरुस्थलों में चलते थे, हिरनों से चलने वाले रथ का वर्णन वेदों में हुआ है। इसके साथ अश्वरहित रथ की भी चर्चा वेदों में हुई है। मरुत वीरों का रथ और भी है जो अश्वरहित होता है।

अनेनो वो मरुतो यामोअस्त्व

नश्वश्चिद् यमजत्यरथीः

अनवसो अनभीशू रजस्तूर्वि

रोदसी पथ्या याति साधन। (ऋ0सं0 6.66.7)

मरुतो के विमान

मरुतों के विमान भी हेाते थे।

हे मरुतों! तुम अंतरिक्ष से हमारे पास आओं। (ऋ0 5.53.8)

अंतरिक्ष से संचार करने वाले आकाशयान उनके पास थे।

मरुतों का स्तोता अमर होता है।

ये मरुत मानव थे।

व्यक्त्न् रुद्रा व्यहानि शिक्वसो व्यन्तरिक्षं वि रजांसि धूतयः।

वि यदज्राँ अजथ नाव ई यथा वि दुर्गाणि मरुतो नाह रिष्यथ।। (ऋ0 सं0 5.5.4.4)

यही नहीं मरुद्गण रात्रि के समय, दिन के समय, अन्तरिक्ष में रजोलोक में से नौकाओं के समान तुम जाते हो, तब कठिन प्रदेश को पार करते हो, पर थकते नहीं।

त्रायन्तामिह देवास्त्रायतां मरुतां गणः। (ऋ0सं0 10.137.4)

इन मरुत् वीरों का गण हमारा संरक्षण करे, यह गण प्रजाजनों का संरक्षण करता था। सूचना पाते ही ये गण कार्य करने के लिए सिद्ध हो जाते थे।

मरुतो गणानां पतयः (तैत्तिरीय 3.11.4.2)

मरुत् गणों के स्वामी है। गणों में ही रहते है। गणशः किसी भी कार्य के लिए जाते हैं। इसी कारण सर्वदा ये संघ से संगठित रहते हैं।

मरुत् वीर गणों के साथ मेरी सुरक्षा करें। किसी भी मन्त्र में अकेला व्यक्ति आयें, ऐसा नही कहा गया है बल्कि वे गण के साथ आयें।

गणशः एव मरुतस्तर्पयति। (काठ0 21.36)

मरुत्गण के साथ ही अपना संरक्षण कार्य करते है। मरुतों की तृप्ति करने के लिए जिस समय बुलाते है उस समय सघंशः ही उनको बुलाते है, और संघशः ही उनको अन्न और रस अर्पण करते हैं। उनका रहन–सहन जीवन सयंमित और अनुशासित होता है।

अतः निष्कर्षतः हम कह सकते है कि वैदिक वाड्मय में वर्णित सैन्य विज्ञान में जो व्यवस्था एवं सेना परिचय द्रष्टव्य होता है, वह वेद की तरह ही प्राचीन एवं सर्वोत्तम है।वेद में मरुत्गण जिस तरह मनुष्यों की रक्षा करते है, तथा संघ के साथ आह्वाहन करने पर मनुष्य की रक्षा हेतु आते है वैसा आधुनिक समय में दृष्टिगोचर नही होता है, वैदिक वाड्मय की सेना वास्तव में देवताओं की सेना थी, जो मरुतगणों के द्वारा युद्ध आदि के कार्य सम्पन्न किए जाते थे। मरुतगण अदम्य वीर एवं साहसी सैनिक होते थे। ऋग्वेद कालीन सैन्य विज्ञान की बात करें तो आर्य जातियों को युद्ध प्रिय था एवं उन्हें युद्ध कला का अच्छा ज्ञान भी था। धुनष–बाण, तलवार इत्यादि इनके प्रमुख हथियार थे। ऋग्वेद में अनेक युद्धों का वर्णन किया गयाा है। सबसे प्रधान युद्ध दाशराज युद्ध है जो आर्यो के दस प्रधान राजाओं में आपस में ही हुआ था। इन्द्र ने इसमें सर्यूवंशी राजा सुदास की सहायता की थी।

अन्ततः वैदिक वाड्मय में वर्णित सैन्य विज्ञान अद्भुत एवं दैवीय शक्तियों से सम्पन्न है जो वर्तमान युग में एक नयी चेतना के रुप में हमारे सामने द्रष्टव्य है।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. ऋक् सूक्त संग्रह – डा0 हरिदत्त शास्त्री
2. वैदिक यज्ञ संस्था और वेद विज्ञान – प्रो0 ओम प्रकाश पाण्डेय
3. https://hi.m.wikipedia.org

*****